भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-4, अंक-7	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-25.00
शुक्रवार, 25 जुलाई' 80	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 2.25

कृपावतार स्वामिश्री सहजानंदजी

गोपीनाथजी स्वयं महाराज का स्वरूप.....

गढडा में जब मंदिर निर्माण पूर्ण हो गया तब निष्कुलानन्दस्वामी महाराज के पास आए और प्रणाम कर के कहाः ''महाराज ! मंदिर निर्माण पूर्ण हो गया है, मूर्तियाँ भी तैयार हैं, अब आप मूर्ति प्रतिष्ठा कीजिए।'' निष्कुलानन्दस्वामी की बात सुन कर महाराज ने गोपालानन्दस्वामी को अच्छा मुहूर्त निकालने को कहा। स्वामिजी ने आश्विन शुक्ला द्वादशी का दिन अच्छा है ऐसा कहा और महाराज ने इस मुहूर्त को स्वीकृत करा। फिर तो निमंत्रण पत्रिका गाँव गाँव में भेजी गई। साधु आए, हरिभक्त आए और अन्य भी आये। महाराज ने इस प्रसंग में उमरेठ के वेदपाठी विप्रवरों को खास बुलाये थे।

सं. 1885 के आश्विन शुक्ला द्वादशी के दिन भव्य समारोह हुआ और महाराज ने गोपीनाथजी और राधिका जी की मूर्तियों की विधिवत् प्रतिष्ठा की। गोपीनाथजी की मूर्ति ठीक महाराज के नाप की है। उस समय दादाखाचर को बुला कर महाराज ने कहा–

''दादा ! यह मेरा स्वरूप है। इन मूर्ति में मैं सुप्रतिष्ठित हूँ। जो सेवा इस मूर्ति की होगी वह सब मैं स्वीकार करूँगा।''

यूँ कहकर महाराज ने मूर्ति को दृढ़ालिङ्गन दिया और मूर्ति के सिर पर दोनों हाथ रख दिये। पास में वासुदेवनारायण की मूर्ति की भी महाराज ने प्रतिष्ठा की। पश्चिम के ओर के मन्दिर में धर्म-भक्ति (महाराज के माता-पिता) की मूर्तियों की भी स्थापना की गई। और पूर्व की ओर सूर्यनारायण और श्रीकृष्ण, बलदेव और रेवतीजी की मूर्तियों की स्थापना हुई। दादाखाचर की साध पूर्ण हुई !

गढडा मन्दिर क्या है ?

वास्तव में गढ़डा का मंदिर महाराज की प्रसादी है, जीवुबा-लाडुबा-दादाखाचर की अप्रतिम त्याग की कहानी है, साधुओं और हरिभक्तों का केन्द्र है। महाराज वहाँ नित्य विद्यमान हैं। अतः पूरे संसार की यह धूरा है। इसके दर्शन करते हुए व्यक्ति को विश्रांति मिलती है। हजारों कहानियाँ इस मन्दिर के साथ जुड़ी हुई हैं। महाराज की भक्तवत्सलता, परम आध्यात्मिकता, विवेक,

आग्रह का अभवा, श्रमयज्ञ आदि आदि कहानियों के कारण गढडा मन्दिर के दर्शन से केवल नेत्रतृप्ति ही नहीं होती है, धर्मदीक्षा भी मिलती है। सब को एक बार गढडा जाना चाहिए। वहाँ की उन्मत्त गंगा (धेला) महाराज के नित्य स्नान से पवित्र होकर पवित्र तीर्थ है। वहाँ के नीम के पेड़ जहाँ महाराज बैठ कर नित्य कथा करते थे वह कितना पवित्र है! इसकी भी कहानी है।

नीम के पौधे की पवित्र कहानी

एभलखाचर एक बार अपने साले के साथ बाबरियावाड के उमेज गाँव में गए थे। वहाँ लारवाआहीर की बाड़ी में घूमते-घूमते उन्होंने एक केले के वृक्ष के पास नीम का पौधा देखा। उस समय उस बाड़ी में विट्ठलानंद और बालानंद साधु भी थे। उस नीम के पौधे को देख0 कर उन साधुओं ने कहाः ''यह पौधा बहुत पुण्यशाली जीव है। इसका जन्म हुआ है वनस्पति के रूप में, किन्तु इसको महान् भगवत्संबन्ध होगा। इसी जन्म में इसको भगवान मिलेंगे।'' एभलखाचर यह सुन रहे थे। इन्होंने सोचा कि यदि मैं इस पौधे को गढडा ले जाऊँ तो अच्छा होगा। क्योंकि जब इसको भगवत्सम्बन्ध होगा तो मुझे भी होगा, मेरे सारे परिवार को होगा और जो-जो इसकी छाया में आयेंगे उन सबको होगा। उन्होंने इस पौधे को आहीर के पास से माँग लिया और गढडा ले आये ! अपने कमरे के सामने इसको आरोपित किया और पुत्रवत् परवरिश की !! साधुओं की वाणी सत्य हुई। उसकी छाया में बैठ कर स्वयं भगवान स्वामिनारायण ने 'वचनामृत' पान करवाया यह कथा सुप्रसिद्ध है। गढडा के कण-कण की ऐसी कहानी है। महाराज ने खुद यहाँ श्रमयज्ञ किया है, खुद ने अपनी मूर्ति की आरती भी की है। महाराज अत्यंत कृपालु थे। इनके द्वारा किया और करवाया श्रमयज्ञ शुष्क कभी नहीं था।

श्रमयज्ञ या आनन्द का वितरण

महाराज नित्य अनेक लीलायें करते रहते थे और परमानंद प्राप्त करवाते थे। एक प्रसंग यहाँ निश्चित उल्लेखनीय है—गढडा मंदिर निर्माण के समय का यह प्रसंग है। धर्मस्वरूपानंद ब्रह्मचारी मंदिर का काम करवा रहे थे। उनके सारे खुले शरीर पर चूना लग गया था। इतने में महाराज आ पहुँचे। कार्य में एकरस सन्त को देख कर प्रसन्न हो गये। उनके शरीर को लगे हुए चुने को देख कर महाराज स्वयं साफ करने लगे। संत ने महाराज के हाथ पकड़ लिये और कहाः

''महाराज ! रहने दो। मेरे शरीर पर चूना लग गया है, आपके शरीर पर भी लग जायेगा। यह सुन कर उनको और वहाँ उपस्थित सबको महाराज ने कहाः ''यहाँ हिमालय के ऋषि तप कर रहे हैं। उनके शरीर पर बर्फ की बारिश हुई है। मैं बर्फ हटा रहा हूँ।''

सारे श्रमयज्ञ को धर्मभक्ति का महिमा मिल गया। सब प्रसन्न हो गये। धर्मस्वरूपानन्दजी ने महाराज को हँसते हुए कहाः ''महाराज ! ठीक है मैं ऋषि हूँ और यह कार्य (श्रम का) तप है, किन्तु जो यह बर्फ हटा रहा है वह कौन है?'' महाराजः ''घर का मालिक ! वह हो तो इतने ख्याल से संभाल लेगा!! यह किसका भवन निर्मित हो रहा है? हमारा ही तो !!!''

कृपावतार की सनातन कृपा

अब किसी भी पाठक को महाराज और गढडा मन्दिर के सम्बन्ध के बारे में कहना शेष नहीं है। अक्षरधाम निवासी महाराज का भूतल का यह भी एक निवास स्थान है, यह अक्षरधाम ही है। इसके निर्माण से महाराज ने अपनी उपस्थिति मूर्ति द्वारा भी भूतल पर सनातन रूप से सिद्ध की है। यह तो है कृपावतार की जगज्जनों पर सनातन कृपा !

क्रमशः

गुरुपूर्णिमा

(अशेष समर्पण का दिन)

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा

आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा का दिन 'गुरुपूर्णिमा' के दिन के रूप में मनाने की भारतीय सांस्कृतिक परम्परा है। ''साधु चलता भला'' इस कथन के अनुसार हमारे भारतीय संत साधु शिष्यों के साथ सतत विचरण करके धर्म-चक्र प्रवर्तन करते थे– गांव-गांव में जाते थे और आमप्रजा से मिलकर उसको धर्म की संजीवनी पिलाकर सदा उन्नत आनन्दमय, परमात्मामय बनाने की सेवा करते थे। किन्तु जब चातुर्मास का प्रारम्भ होता था तो एक स्थान पर स्थिर हो जाते थे। यह समय अंतदर्शन (introspection) का होता था, शिष्यों को गूढ़ ज्ञानोपदेश देने का होता था, उस स्थान के निवासियों के लिए दिव्यता की अनुभूति का होता था। जिस दिन गुरु गांव या नगर में आते थे, जिस दिन अंतदर्शन का प्रारम्भ करते थे, जिस दिन शिष्यों को मोक्ष-विद्या की प्रारम्भ कराते थे वह दिन आषाढ़ की पूर्णिमा का होता था। अतः वह 'गुरुपूर्णिमा' के रूप में प्रचलित हो गया। एक अच्छी परम्परा ने जन्म लिया।

ब्रह्मविद्या का प्रारम्भ

प्रचलित धर्मशास्त्र आदि विद्याओं का प्रदान तो सतत विचरण में होता था। किन्तु 'ब्रह्मविद्या' शान्त एकान्त में दी जाती थी और वह व्याख्यान द्वारा नहीं किन्तु ''मौन व्याख्या प्रकटित परब्रह्म तत्त्वं....'' इस कथन अनुसार हृदय से सीधी हृदय मे दी जाती थी। वहाँ न वाणी, न मन, न कुछ।

शिष्य की पात्रता

इस 'ब्रह्मविद्या' की प्राप्ति के लिए शिष्य ही पात्रता प्रमुख बात थी और है। इस पात्रता में प्रथम आवश्यकता 'निष्ठा' की होती है। गुरु-शिष्य यदि दिव्य प्रेम के मधुर सम्बन्ध से सम्बन्धित न हो, यदि गुरु, शिष्य को पात्र न मानता हो, यदि शिष्य गुरु की क्षमता को स्वीकृत न करता हो अर्थात् उसकी गुरु में अननय निष्ठा न हो तो उसे 'विद्या' प्राप्त करना असंभावित ही है।

सच्ची निष्ठा का अर्थ

परमात्मा के प्रति निष्ठा का अर्थ है–''नाडहं कर्ता, हरिःकर्ता।'' इस सचराचर विश्व में जो कुछ हो रहा है औरअपने जीवन में आंतर और बाह्य जो कुछ हो रहा है इसका कर्ता मैं नहीं, किन्तु हरि-परमात्मा है यह ही अर्थ है। वास्तव में सत्य यह ही है, किन्तु प्रायः लोग अपने आपको कर्ता मानते हैं और फिर संसार की भूलभूलैयां में भटकते रहते हैं।

गीता में स्पष्ट कहा हैः

'अहंकार विमूढात्मा कर्ताहमिति.....'

अहंकार से जिसका चित्त मूढ़ हो गया है वह अपने आप को कर्ता मानता है और अहंभाव से आचार करता है।

गीता के शब्द हैः

''मिथ्याचारः स उच्यते।''

यह मिथ्या आचार है।

समुद्र के दर्शन होते ही नदी अपना समग्र अस्तित्व उसमें मिलाने के लिए जितनी उत्सुक होती है इतनी ही उत्सुकता परमात्ममिलन के

लिए होनी चाहिये। जब तक परमात्ममय बन कर अपने आपको खो देने की, आनन्द महासागर में मिल कर आनंदमय बनने की तीव्र इच्छा नहीं है तब तक बाह्य सेवा का मूल्य नहीं है। इतना ही नहीं वह मिथ्याचार है।

भगवान स्वामिनारायण की वाणी

इस विषय में भगवान स्वामिनारायण की वाणी सुनियेः

''**यह सारे जगत के कर्ता-हर्ता भगवान है।** उनको कर्ता-हर्ता हम नहीं समझेंगे और विश्व के कर्ता-हर्ता–

काल को मानेंगे

अथवा

माया को मानेंगे

अथवा

कर्म को मानेंगे

अथवा

स्वभाव को मानेंगे

–तो वह तो परमात्मा का द्रोह है।''

(वचनामृत वड़ताल 2)

यदि भगवान में हमारी निष्ठा नहीं है यदि हमारी निष्ठा काल, कर्म, स्वभाव और माया में है और फिर भी भगवान की हम पूजा करते हैं तब गीता के शब्दों में तो 'मिथ्याचार' है, किन्तु भगवान स्वामिनारायण तो स्पष्ट शब्दों में कहते हैं यह भगवान का द्रोह है।

''(भगवान को) अकर्ता कहना तथा अरूप कहना और भगवान नहीं किन्तु अन्य कालादिक को कर्ता कहना यह भी भगवान का द्रोह है। इस प्रकार जो भगवान का द्रोह नहीं करता है वह ही भगवान की संपूर्ण पूजा करता है, किन्तु (इस प्रकार भगवान के कतृत्व में श्रद्धा बिना) जो चंदन पुष्पादिक से भगवान की पूजा करता है वह भी भगवान का द्रोही है।'' (वचनामृत वड़ताल 2)

भगवान ऐसी पूजा से प्रसन्न नहीं होते हैं किन्तु–

जगत का कर्ता-हर्ता भगवान को मानता है, मूर्तिमान मानता है उससे भगवान प्रसन्न होते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान के प्रति, भगवान की महत्ता के प्रति चित्त जागृति न हो, भगवान के प्रति भक्ति न हो और ऊपर-ऊपर से पूजा करेंगे तो यह केवल मिथ्याचार और दंभ ही नहीं है, वह तो केवल (अपमान ही नहीं) द्रोह है। ऐसे द्रोही को भगवान कैसे स्वीकार करेंगे?

हम 'काका-काका', 'पप्पा-पप्पा', 'स्वामी-स्वामी' करते रहेंगे और काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी की साकार ब्रह्मरूपता स्वीकार नहीं करेंगे, अपितु फूल हार, चंदन टीका आदि करते करते रहेंगे तो क्या मिलेगा? कुछ नहीं।

गुणातीत परम्परा का निर्वाह

यहाँ हमें हमारे परम गुरु गुणातीतानंदस्वामी के जीवन से उदाहरण लेना है। उनके पास क्या नहीं था? सत्ता, सामर्थ्य, बल, ओजस सब कुछ था। किन्तु इनको इन सब में कभी रस नहीं था। स्वयं साकार ब्रह्म थे, भगवान के अखंड धारक थे, भगवान स्वामिनारायण का अक्षरधाम थे तथापि यह सब ज्ञान छोड़कर वे निरंतर भगवान स्वामिनारायण के ही मुखदर्शन के लिए सदा सर्वदा उत्सुक थे, भगवान की सेवा में ही निरंतर खड़े रहते थे जब तक भगवान स्वामिनारायण पृथ्वी पर थे उन्होंने अपने अस्तित्व की झाँकी भी किसी को नहीं आने दी। एक महाराज ही उनका सर्वस्व, उनका आधार, उनका जीवन था। क्यों?

उनके हृदय में भगवान के प्रति सतत् श्रद्धा थी। प्रेम इतना था कि महाराज के साथ एक हो गये थे। सहजानंद में निमज्जित होकर उनको परमानंद प्राप्त हो गया था। वे जानते थे कि प्रकृति

से उत्पन्न पदार्थ, सेवा, जुलूस, बहुमान आदि से महत्ता नहीं है। शुद्ध प्रेम–समर्पण–शुद्ध भक्ति में ही महत्ता है।

भगवान और भगवत् स्वरूप संत (गुरु) में एक ही प्रकार की श्रद्धा

ऐसी श्रद्धा होनी चाहिये परमात्मा के प्रति और ऐसी ही श्रद्धा होनी चाहिये अपने गुरुदेव में (वच. वडः 5)। गुरु को हृदय निवेदित न कर, और कुछ निवेदित करें तो यह अर्थहीन है। यह सब '0' (शून्य) है। शून्य एक हो या पाँच सब शून्य ही है, किन्तु इन शून्यों के आगे जब भक्ति का अंक आ जाता है तब शून्य का भी मूल्य होता है।

गुरु को गुरु मानने का एक ही तरीका हैः

(1) गुरु के प्रति भक्ति,

(2) 'गुरु साकार ब्रह्म है'–ऐसी स्पष्ट निष्ठा,

(3) गुरु परब्रह्म की ओर ले जाने वाली एक कड़ी है ऐसी दृढ़ श्रद्धा और

(4) गुरु के चरणों में अपना संपूर्ण अस्तित्व (देह, मन, वाणी, क्रिया, भावना, स्वभाव आदि सब) का विसर्जन।

सच्ची गुरुपूर्णिमा मनाने का तरीका

गुरुपूर्णिमा हम तब सच्ची मनायेंगे जब हम उपर्युक्त सम्बन्ध गुरु के साथ बनायेंगे। गुरु को चंदन, टीका, पुष्प, शाल-दुशाले, धन, मान सब कुछ गुरुपूर्णिमा के दिन दें यह अच्छी बात है, किन्तु यह बात श्रद्धा के रूप में ही होनी चाहिए। श्रद्धा ही न हो तो ब्राह्याचार ही रह जाएगा। स्वामिनारायण भगवान की प्रसन्नता इन में नहीं थी यह हम ऊपर देख चुके हैं।

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी की प्रसन्नता भी इसमें नहीं थी। शास्त्रीजी महाराज–योगीजी महाराज की प्रसन्नता भी इसमें नहीं थी। आज पू. काकाजी, पू. पप्पाजी, पू. स्वामिजी को भी हम इस प्रकार प्रसन्न नहीं कर सकते। भगवान और भगवान के असली संत इतने कच्चे नहीं है। इनको तो चाहिये अन्तर की दिल-की गहराइयों का सच्चा भाव।

एक बार ऐसा भाव आ जाएगा तो कल्याण परमानंद और परमकल्याण दोनों के लिए ही बैठे हैं। पर यहाँ नहीं चलती है। हमारे दिल का दरवाजा खुला होना चाहिये, तब ही तो प्रेम-पारावार में हम मग्न हो सकते हैं। यदि दिल चुराकर बैठ जायेंगे, भाव भगवान में नहीं परन्तु स्वजन बांधव संसार में रखेंगे, समर्पण का मौका मिले तब दिल पर अहंकार का ताला लगा देंगे–इस प्रकार भगवान या संत के आगमन के मार्ग पर लाल बत्ती रख देंगे तो हमारे दिल के दरवाजे से भगवान निश्चित वापस लौट जायेंगे और हम, काल, कर्म, माया, स्वभाव के राक्षसी जबड़े में फंसते ही रहेंगे। हमारे खुद के साथ–साथ अपने आपके साथ कितना बड़ा अन्याय होगा?

तो इस गुरुपूर्णिमा के दिन हम प्रार्थना करें कि–

हे भगवान, हे भगवत् स्वरूप संतों, हे काकाजी, हे पप्पाजी, हे स्वामिजी

- हमारे गुरु शिष्य के संबंध में दृढ़ता हो,
- हमारी संकल्प की बीमारी हटाईये,
- हमारा स्थूल देहाध्यास हटाईये,
- आपकी सच्ची भक्ति द्वारा हमारे जीव को संबल प्राप्त हो,
- आपकी प्रसन्नता प्राप्त हो,
- आप हमें शुद्ध सर्वोपरि समझ दीजिये,
- आप हमारी परीक्षा करें,
  आप हमें विषम देशकाल दें,
  आप हमारा मनमाना न होने दें,
  मान-अपमान, सुख-दुख, हर्ष-शोक किसी भी प्रकार की अवस्था में रखें,
- तब भी हमारा मन परेशान न हो, हमारी श्रद्धा विचलित न हो,
- आप हमें आपके लाडले बेटे बना दें.....!

GURU POORNIMA

(The day of inner awakening and complete surrender)

The Indian Progeny

According to India vedic culture and tradition the day of full moon of bright half of Ashad is celebrated as "Guru Poornima" one of most auspicious day.

One this auspicious day the disciple offers cash or kind as Guru Dakshina to his spiritual Master-Guru as a token of love and dedication towards him. On this holy day the disciple reaffirms his faith and total trust towards his spiritual Master for his spirutal advancement and Guru in his turn showers blessings and transmits grace and compassion and cements the bondage of love-intimacy taking his disciple further ahead on his spiritual sojourn of Supreme Realization.

The real test of the acceptance of Guru's love and compassion by the disciple is true and spontaneous upliftment into higher consciousness; thus eradicating shortcomings, ignorance and 'Avidya' by self introspection, meditation and prayer with intense aspiration and surrender on this most auspicious momentous day of total change in our life. The self and Supreme Realization of the Ultimate Eternal Reality is granted not after death in heaven, but here and now at this moment. This unique and marvellous transformatory miracle is possible wherever there is "Pratyaksha Upasana" or love-intimacy with full trust and surrender between the disciple and the perfect Master. It is the unity in diversity and transcending into the ultimate infinite Reality.

The Real Guru

The perfect Master or Real Guru is He who never orders nor dominates his disciple. He does not hynotize or adopt brain washing tactics or strategies to influence and impress upon the real truth seeker. He acts as the **Path finder** and ture-guide like the torch bearer or light-house for awakening and illuminating the inner being of the disciple.

He also fully participates in the worldly life of the disciple so that out of love and affection towards Guru, the disciple is induced to drop wrongful habits and relinquish all other illusionery mundane attachments. Thus the Guru nourishes his spirit with love intimacy and even does Tapasya and repentance and takes painstaking efforts physically and even subtly for the purification and upliftment of the disciple. The true disciple has then to accept his guide as Supremely Divine Master or Godfather and believe him and all his actions as purely and supremely divine as advocatd in Gita i.e. जन्म कर्म च में दिव्यं... ।

He then attains freedom from all limitations and bondages and becomes immune from fear, insecurity, chaos, tensions and miseries and accelerates his race on the Raj Marg or High Way of final realization. The spiritual knowledge is imparted straight from the heart to the heart unaided by language of words or thoughts of mind. The language of silence from out of real true love and feelings is more communicative and effective. The inevitable condition for transmission of power-i.e. unique natural Shaktipat is the mutual faith, trust and confidence between Guru and Shishya.

Meaning of True Faith

Faith in God means,

''नाऽहं कर्ता हरिःकर्ता''

The doer and controller of all actions related to us or to others in or outside our life is nobody else but God and God alone.

It has been advocated clearly in Bhagwad Gita.

''अहंकार विमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते, मिथ्याचार स उच्यते''

Those who are ignorant, by arrogance, thinking themselves to be the doer, are behaving spuriously. Lord Swaminarayan's preaching on this subject says that-

God is the only Supreme doer and guide of this whole world. If we do not think this to be so and rather give precedence to fate, delusions, actions or to our mind then it is ma evolance against God on our part.

(Vachnamrit-Vart.-2)

Alliance of Heart

The true worship lies not in ceremonies of offering flowers, fruits, sandals and other inititations and mechanical rituals but in firmly believeing and strengthening the trust of accrediting all actions and cosmic movements to God who is not formless and illusionary. To day also if we merely chant Swaminarayan Mantra with the remembrance of Realised Saints or P.P. Kakajee,Papajee & Swamijee but do not believe them Supremely Divine, it will be merely mental gymnastic and mechanical worship as an exercise in futality. The rationalist mind has to accept Him as the Divine personality after unique spiritual experience and then the self advancement is reflectd as the specific change in one's life for better and emancipated life. One then attains the 'sthita-pragna' state of mind as said in Gira and enjoys the total bliss with contentless consciousness in this very life and ultimately enters into Brahmic consciousness or Bodiless Divine consciousness. He then permanently reflects divine qualities like equality, fearlessness, humility, true love and friendliness, amongst all the fellow beings. This is then param-dham or eternal abode of God or real heaven on earth and within the heart.

The Gunatit Progeny and Guru Poornima Celebrations:

The most brilliant example of ideal worship is pressentd by no other than Mul Akshar Murti Gunatitanandswami, the Eternal Abode of Almighty God Lord Swaminarayan, also known as Sahjanandswami. Gunatitanandswami is the most ideal Supreme Master of all jivanmuktas and also the most ideal disciple of Supreme God Sahjanandswami. He has to his disposal all the powers of the world. All activities of the countless universes are initiated and terminated according to his wishes, yet he always remians as the most humblest of humble servant of God; always and for ever remains non-existnt before Him with 'Swami Sevak' state of mind. All his movements are centered around God only to please Him and live according to His wishes and desires and that too inspite or enjoying the bliss of the highest degree and having complete and total identification and equivalence with God-of which Lord Swaminarayan Himself has said-

"Without Him (Akshar), I (Purushottam) remain unmanifestes and without me he exists not."

He advocated same doctrine in shloka-116 of Shikshapatri and Vach. Gadhada First-44. If Jiva wants to be liberated from the vicious circle of the cycle of countless births and deaths and wants to attain the status of jivanmukta and enjoy eternal bliss and peace in this very life; he has to fulfill this condition of unflinching faith and devetion of love intimacy towards such Gunati Purush who is the Real Master or Sadguru. A real Guru could not be pleased by outward ceremonies, worldly things like money or wealth or other customary offerings or even by acts motivated by selfish and bad desires, however perfect

and fine their performances may be.

The real disciple is one whom God or Guru remebers all the time, who is in the centre of His heart and on whom He showers all His grace and blessings without asking for. There were very very few such devotees during the time of Lord Sahajanand Swami.

So, let us come together and resolve on this auspicious day to celebrate this memorable day in its most perfect meaning i.e. by establishing a relation with Guru according to his wshes i.e. by complete and unconditional surrender with love intimcy and intense prayerful aspiration.

Let us also resolve to have intimate friendliness with such fellow disciples whom Guru has recognized and advocated as the true and real Sadhaka. This will really please Him because what He wants is the total voluntary abdiction of ego to His lotus feet. He is just there to uplift us from our bondages-physical as well as subtle and take us to the degree of highest joy and hoppiness, bliss, power and light known as Gnan Samadhi which is the consciousness devoid of all dualities, conflicts and miseries and which is above the limitations of time, space, causation and other worldly doctrines and principles.

May God shower His grace and compassion so that we may get true sense to believe Him and His Bhaktas as supremely divine. May He give us the company of such emancipated jivanmuktas so that we may have perfect identification and equivalance with Him to enjoy the real eternal bliss and happiness of Supreme Reality and feel the presence of kingdom of heaven in our very life on this earth and share our love and friendliness with all those who come in our contact.

Jay Swaminarayan
-Miss Jaishree Keswani

दूरदर्शन के अधिकारियों को आशीर्वाद

प्र. ब्र.स्व.प.पू. काकाजी के 63वीं जन्मजयंती पर श्री दिल्ली-गुजराती समाज के ''शाह ऑडिटोरियम'' में 12 जून जो समारोह हुआ उसके कुछ अंशों की टी.वी. फिल्म लेकर दिल्ली के दर्शकों को दिखा कर भगवान स्वामिनारायण की द्विजन्मशताब्दी जब नजदीक आ रही है तब उन्हीं की भक्ति और सदाचार की शिक्षा जनता तक पहुँचाई इसके लिए दूरदर्शन के अधिकारियों को धन्यवाद! भगवान स्वामिनारायण इनको संबल दें और जीवन में वे हर प्रकार की प्रगति करें ऐसे आशीर्वाद।

—साधु हरिप्रसाददास

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	6.8.80	बुधवार	कामिका एकादशी, व्रत
2. दि.	16.8.80	शनिवार	नागपंचमी, पू. कृष्णजी अदाश्री का प्राकट्यदिन
3. दि.	20.8.80	बुधवार	नवमी, श्री हरिजयंती
4. दि.	22.8.80	शुक्रवार	एकादशी, व्रत
5. दि.	26.8.80	मंगलवार	श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबंधन

Published by Sadhu Mukundjivandas for Yogi Divine Society
A-103, Ashokvihar-III, Delhi110052, India. Tel.: 713838
Prined at Thakkar Printing Press, 2588, Basti Punjabian, Subzi Mandi, Delhi 110 007 Phone: 524058